बुद्धकाल में समाज

भाग:-1

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग
SNSRKS COLLEGE SAHARSA

वर्णव्यवस्था: उत्तरवैदिक कालीन वर्णव्यवस्था इस काल में भी जारी रही. समाज में चार वर्ण थे - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र. ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को द्विज कहा जाता था तथा उन्हें उपनयन धारण करने का अधिकार था जबकि शूद्रों तथा सभी वर्ण की महिलाओं को अधम कोटि का माना गया था तथा उन्हें ऊपर के तनों वर्णों की सेवा करना था.

आपद्ध धर्म की संकल्पना का उद्भव: वर्ण व्यवस्था में आपातकाल की संकल्पना थी. इसके अनुसार विपत्ति काल में उपर के वर्ण का व्यक्ति अपने से नीचे वर्ण के व्यक्ति का पेशा अपना सकता था .

अश्पृश्यता का उद्भव: उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था होने के बाद भी छुआछुत या अस्पृश्यता का अस्तित्व नहीं था, क्योंकि उत्तरवैदिक काल में रत्नकार जो की शुद्र वर्ग में आता था उसकी समाज में काफी प्रतिष्ठा थी तथा उपनयन का अधिकार था. लेकिन इस काल में पहली बार छुआछुत का का उद्भव हुआ.

संस्कारों की स्थापना: इस समय पहली बार हिन्दू जीवन में 16 संस्कारो को मानने की परम्परा प्रारम्भ हुआ (गर्भादान से अन्त्योष्टि तक).

वेश्यावृति का उद्भव: इसे नगरीकरण का परिणाम माना जाता है.

विवाह की मान्य और अमान्य पद्धति: विवाह को हिन्दू जीवन में संस्कार का दर्जा दिया गया है. इसे संविदा (कॉन्ट्रैक्ट) न मानकर पति-पत्नी के बीच का अटूट सबंध माना गया. इस समय विवाह के कुल 8 प्रकारों की चर्चा मिलती है जिनमे चार मान्य थे जबकि चार प्रकार को अमान्य माना जाता था. ये निम्नलिखित थे.